एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 08 (अगस्त, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

पुष्प फसलों से सुगंधित तेल निकालना और पैकेजिंग: किसानों के लिए व्यावहारिक गाइड

*विकास यादव, रूपाली शर्मा एवं संदीप भारद्वाज
चौ. चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vikasydv100@gmail.com

फूलों की खेती करने वाले किसान केवल फूल बेचकर ही नहीं, बल्कि उनसे सुगंधित तेल (एसेंशियल ऑयल) निकालकर भी अच्छी कमाई कर सकते हैं। तेल निकालने के कई तरीके हैं। सही तरीका चुनने और तेल को सही ढंग से रखने से उसकी बाजार में अच्छी कीमत मिलती है।

तेल निकालने के पारंपरिक तरीके

जल आसवन: यह सबसे पुरानी और आसान विधि है। इसमें ताजे फूलों को पानी में डुबोकर उबाला जाता है। भाप के साथ तेल अलग होकर इकट्ठा हो जाता है। छोटे स्तर पर काम शुरू करने वाले किसानों के लिए यह तरीका काफी सुविधाजनक है।

भाप आसवन: व्यावसायिक स्तर पर सबसे ज्यादा इसी तरीके का इस्तेमाल होता है। इसमें फूलों के बीच से गरम भाप गुजारी जाती है। भाप फूलों से तेल को भाप बनाकर उड़ा ले जाती है, जिसे बाद में ठंडा करके तेल के रूप में जमा कर लिया जाता है। इससे तेल की गुणवत्ता बहुत अच्छी रहती है।

विलायक निष्कर्षण: इस विधि में हेक्सेन या एथेनॉल जैसे रसायनों का उपयोग किया जाता है। ये रसायन फूलों में मौजूद तेल को अपने अंदर घोल लेते हैं। बाद में रसायन को वाष्पित करके उड़ा दिया जाता है और गाढ़ा शुद्ध तेल बच जाता है। नाज़ुक फूलों से ज्यादा तेल निकालने के लिए यह तरीका सही रहता है।

एनफ्ल्यूराज: यह एक पुरानी विधि है जिसमें बिना गंध वाली वसा (चर्बी या तेल) की परत पर फूलों को रखा जाता है। वसा फूलों की सुगंध सोख लेती है। चमेली और रजनीगंधा जैसे बेहद कोमल फूलों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

तेल निकालने के आधुनिक तरीके

CO_2 निष्कर्षण: इसमें कार्बन डाइऑक्साइड गैस को बहुत तेज दबाव और कम तापमान पर इस्तेमाल किया जाता है। इस तरीके से निकाला गया तेल पूरी तरह शुद्ध होता है और उसमें किसी रसायन की मिलावट या गंध नहीं बचती।

कोल्ड प्रेस निष्कर्षण: इसमें बिना गर्म किए, मशीनों से दबाकर तेल निकाला जाता है। यह तरीका नींबू, संतरे के छिलकों और तेल वाले फूलों के लिए सबसे बेहतर है। गर्म न करने के कारण फूल की प्राकृतिक महक बनी रहती है।

मैसेरेशन: इस विधि में फूलों को किसी हल्के तेल (कैरियर ऑयल) में कुछ समय के लिए डुबोकर रखा जाता है। धीरे-धीरे फूलों की महक और गुण उस तेल में आ जाते हैं।

पैकेजिंग और देखभाल

- **कांच की शीशियां:** तेल को हमेशा गहरे रंग (भूरे या नीले) की कांच की बोतलों में भरें। इससे धूप और रोशनी से तेल खराब नहीं होता।
- **हवाबंद ढक्कन:** शीशी का ढक्कन पूरी तरह टाइट होना चाहिए ताकि हवा अंदर न जाए और तेल का असर खत्म न हो।
- **भंडारण:** बोतलों को ठंडी और अंधेरी जगह पर रखें। इससे तेल लंबे समय तक ताजा रहता है।
- **लेबल लगाना:** बोतल पर फूल का नाम, तेल निकालने की तारीख, तरीका और इस्तेमाल करने का तरीका साफ-साफ लिखें। इससे ग्राहक का भरोसा बढ़ता है।

प्रमुख फूल, उनके घटक और उपयोग

चमेली (Jasmine)

- **मुख्य घटक:** बेंजाइल एसीटेट, लिनालूल, बेंजाइल अल्कोहल, इंडोल।

- **उपयोग:** तनाव, डिप्रेशन, सुस्ती दूर करने में मददगार है। इसके अलावा गले की खराश, खांसी, सूखी व संवेदनशील त्वचा और मांसपेशियों के खिंचाव में इसका इस्तेमाल होता है।
- **तेल की मात्रा:** सुपरक्रिटिकल CO_2 विधि से 100 ग्राम सूखे फूलों से लगभग 12 मिलीग्राम तक तेल मिल सकता है।

चित्र 1: चमेली (Jasmine) का तेल (स्रोत : गूगल/ इंटरनेट)

चित्र 2: गुलाब का तेल (स्रोत : गूगल/ इंटरनेट)

गुलाब (Rose)

- **मुख्य घटक:** सिट्रोनेलोल, जेरेनियोल, नेरोल, फेनेथिल अल्कोहल।
- **उपयोग:** त्वचा की सूजन कम करने, घाव भरने और इन्फेक्शन से बचाने में उपयोग किया जाता है।
- **आवश्यकता:** 1 लीटर गुलाब का तेल निकालने के लिए लगभग 5,000 किलोग्राम गुलाब की पंखुड़ियों की जरूरत होती है।

रजनीगंधा (Tuberose)

- **मुख्य घटक:** यूजीनॉल, जेरेनियोल, फर्नेसोल, मिथाइल बेंजोएट।
- **उपयोग:** इत्र उद्योग में इसकी मांग बहुत ज्यादा है। यह मन को शांति देता है, साथ ही सूजन और ऐंठन को कम करने में भी मदद करता है।
- **तेल की मात्रा:** हॉट एनफ्ल्यूराज विधि से लगभग 6.5% तक तेल प्राप्त होता है।

चित्र 3 : रजनीगंधा का तेल (स्रोत : गूगल/ इंटरनेट)

चित्र 4 : जेरेनियम का तेल (स्रोत : गूगल/ इंटरनेट)

जेरेनियम (Geranium)

- **मुख्य घटक:** जेरेनियोल, सिट्रोनेलोल, लिनालूल।
- **उपयोग:** चिंता और घबराहट दूर करने, गले की खराश, एक्जिमा, मुहांसे, कटी-फटी त्वचा और दाद-खाज के इलाज में इसका तेल काम आता है।

लैवेंडर (Lavender)

- **मुख्य घटक:** लिनालूल, लिनालिल एसीटेट, सिनेओल।
- **उपयोग:** यह चोट, कटने, छिलने और कीड़े के काटने पर तुरंत राहत देता है। सिरदर्द, अनिद्रा, डिप्रेशन, दमा और त्वचा के विभिन्न रोगों में भी यह काफी असरदार है।

चित्र 5 : लैवेंडर का तेल (स्रोत : गूगल/ इंटरनेट)

किसानों के लिए काम की बात

यहाँ हमने सिर्फ जैस्मिन, गुलाब, रजनीगंधा, जेरेनियम और लैवेंडर जैसे कुछ ही फूलों से तेल निकालने की बात की है। लेकिन इनके अलावा भी कई ऐसे फूल हैं, जिनसे तेल निकालकर अच्छी कमाई की जा सकती है जैसे थाइम , आलिव इत्यादि |

जिन इलाकों में सर्दी और गर्मी दोनों मौसम ठीक-ठाक पड़ते हैं, वहाँ किसान अपनी जलवायु के हिसाब से अलग-अलग सीज़न में अलग फूल लगा सकते हैं। खेती शुरू करने से पहले अगर बाज़ार की माँग समझ लें और तेल निकालने की सही मशीन

व तरीका चुन लें, तो पूरे साल की योजना एक बार में ही बन जाती है। इससे साल के ज्यादातर महीने तेल निकालने का काम चलता रहेगा और कमाई के लिए दूसरे कामों का मुँह नहीं देखना पड़ेगा।

इस काम में उतरने के लिए सबसे पहले तेल निकालने की सही तकनीक सीखनी होगी। इसके साथ ही मशीन, बाकी सामान और खेती की शुरुआती तैयारी पर कुछ पैसा लगाना पड़ेगा। पहले एक-दो साल अच्छे पौधे या कलम जुटाना थोड़ा कठिन लग सकता है। पर अगर पौधों की सही से देखभाल की जाए, तो वही पौधे बढ़कर खुद नए पौधे तैयार कर देते हैं। फिर बार-बार बाहर से नए पौधे खरीदने का झंझट खत्म हो जाता है और एक बार का किया खर्च सालों-साल फायदा पहुँचाता है।

फूलों का सुगंधित तेल काफी महँगा बिकता है। सिर्फ कुछ मिलीलीटर तेल की कीमत ही हजारों रुपये तक पहुँच जाती है। इसलिए अगर सही प्लानिंग, सही तकनीक और बाज़ार की माँग को ध्यान में रखकर काम किया जाए, तो सीधे फूल बेचने के मुकाबले तेल बनाकर बेचना कहीं ज्यादा फायदे का सौदा साबित होता है।